परमात्मा से मिलन का सिर्फ एक और एक ही स्थान...!!!

- ब्र. कु. गंगाधर

मनुष्य जो शांत होकर एकाध घंटे के लिए रोज़ बैठ जाये तो अंतर का द्वार खुलने लगता है। परंतु मनुष्य बोर होकर कहता भगवान कहाँ बैठ गये हैं? क्यों कोई उसे ढूंढ़ नहीं पाते? इस बोरियत भरे उलझन के अंधकार के भंवर में उलझ जाता है और थक जाता है। और फिर कुछ आगे उसे दिखाई नहीं देता..., उसे करीब से करीब जगह, मिलने का स्थान का पता ही नहीं, और ना ही उसे उसका ख्याल भी आता।

एक प्राचीन कथा है कि भगवान को अकेले-अकेले मज़ा नहीं आया, इसलिए उसने सृष्टि का सृजन किया। एक के बाद एक करके अनंत जगत बन गया। कल-कल करती नदियां बनीं तो ये जहाँ जाकर मिलती हैं उस सागर का सृजन हुआ। छोटे-मोटे पर्वत बने और असंख्य प्रकार के वृक्षों और वनौषधियों का निर्माण हुआ। अनेक प्रकार के पक्षी, फूल, प्राणियों, जंतुओं... इस तरह पूरा जगत बन गया।

कहीं पर भी कोई उपद्रव नहीं था। हरेक अपनी प्रकृति के अनुरूप जीवन जी रहे थे। भगवान को कोई भी प्रकार की चिंता और परेशानी नहीं थी, परंतु जैसे ही उसने मनुष्य का सृजन किया, उपद्रव बढ़ने लगा। हर रोज़ सुबह हुई और कोई शंका हुई और कोई न कोई फरियाद या समस्या लेकर परमात्मा के द्वार पहुंच जाता। धीरे-धीरे सुबह से शाम तक चौबीस ही घंटे ये उपद्रव चलने लगा। इसीलिए भगवान ने भी व्यथित होकर सर्व देवों को बुलाया और सलाह मांगी कि एक ही तरह की परेशानी से बचने के लिए मुझे क्या करना होगा?

किसी ने कहा, 'मनुष्य जहाँ न पहुंच सके, ऐसी जगह जाकर बैठ जाओ। हिमालय पर्वत सबसे सलामत जगह है। गौरी शंकर की हिमाच्छादित चोटी पर वो कभी भी नहीं पहुंच सकेंगे।' - तो परमात्मा ने कहा, 'मुझे ख्याल है कि कोई तेनसिंह और हिलेरी वहाँ भी पहुंच जायेंगे।'

दूसरे एक देवता ने कहा, 'तो फिर पैसिफिक महासागर में पाँच माइल जितनी गहराई में जाकर बैठ जाओ, तो वहाँ कोई नहीं पहुंच सकेगा।' तो परमात्मा ने कहा, 'आपको अभी भी खबर नहीं है, वहाँ पर भी कोई न कोई वैज्ञानिक पहुंच जाएगा।' चंद्र और तारा पर कोई जगह ढूंढ कर बैठने की भी किसी ने सलाह दी। ... तो परमात्मा ने वहाँ पर भी कोई पहुंच जाएगा ऐसी शंका व्यक्त की। हरेक देवता ने अपनी-अपनी रीति से नई-नई जगह बताई लेकिन मनुष्य के उपद्रवी स्वभाव से परिचित परमात्मा ने कहा कि, मनुष्य शायद कोई जगह ऐसी नहीं छोड़ेगा जहाँ वो सोचे और पहुंच न सके।

आखिर में एक अनुभवी और वृद्ध देवता ने कहा, 'तो फिर एक ही जगह बाकी है, आप मनुष्य के अंतर में जाकर बैठ जाओ।' बाहर-बाहर भटकने के उपद्रवी स्वभाव के कारण वो अंदर जाना कभी भी पसंद नहीं करेगा, इसलिए आपके लिए ये एक ही सलामत स्थान है और कहते हैं कि परमात्मा ने सलाह स्वीकार कर ली। तब से आज तक वो प्रत्येक व्यक्ति के अंतरात्मा में ही विराजते हैं। जब भी उसको आना है तो उसके उतरने का एयरपोर्ट मनुष्य का हृदय ही है। एयरपोर्ट हमेशा साफ-सुथरा, समतल और सुरक्षित होना चाहिए। तभी ही वो वहाँ आते हैं। परंतु हृदय रूपी एयरपोर्ट में देखने की या वहाँ परमात्मा के साथ मिलने का मनुष्य की मति में सूझता ही नहीं।

वो सब जगह भटकता है, थक जाये इतनी हद तक प्रयास करता रहता है लेकिन परमात्मा वहाँ हो, तब तो मिले! सिर्फ एक जगह को छोड़ सर्व जगह पर वो दौड़ता रहता है। लेकिन उसे अंदर जाने का एक भी विचार नहीं आता। इसलिए उसको मार्ग भी नहीं मिलता। परमात्मा अंदर है और वहाँ तक पहुंचने का एक ही मात्र मार्ग है और वो है राजयोग मेडिटेशन। राजयोग मेडिटेशन माना मन को बिल्कुल साफ, स्वच्छ, क्लीन और बुद्धि को क्लियर रखना। मनुष्य अगर शांत होकर एकाध घंटे के लिए रोज़ बैठ जाये तो अंतर के द्वार खुलने लगते हैं और परमात्मा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, मात्र अनुभूति है। सत्-चित् और आनंद की अनुभूति है। बाह्य जगत में जितना भी दूर जाते हैं, वस्तुतः परमात्मा से उतना ही दूर होते जायेंगे।

जो सबसे नज़दीक है, उसका पता भूल मनुष्य ऐसे ही दूर-दूर भटकता रहता है। कितनी बड़ी विचित्रता और कितनी बड़ी करुणता है! यहाँ आपको हम बताना चाहते हैं कि परमात्मा के मिलने का एड्रेस और स्थान आपके करीब से करीब है। परंतु मनुष्य को उसका ध्यान न होना, सही पता न होना और सही तरीका भी मालूम न होने के कारण वो बाहर ही उसे ढूंढ़ने की कोशिश में अपने समय को, अपनी शक्ति को खर्च करते-करते थक जाता है। वास्तविकता यह है, परमात्मा ने कहा मैं आपके हृदय में ही विराजित होऊंगा और वही मेरे मिलने का स्थान है। तभी तो कहते हैं, भीतर का दरवाज़ा खोल रे मानव, भीतर का दरवाज़ा खोल। निर्मल मन से निर्मल हृदय को निहार रे मानव जहाँ तुझे सुख, शांति और चैन मिलेगा।

परचिन्तन, परदर्शन, परदोष रूपी माया को पहचानो और विजयी बनो

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

हम आत्मायें बाबा के घर में बैठे हैं, बाबा का घर सो मेरा घर। हमारा घर सो बाबा का घर, सदा ही यह भान रहे। ज़रा भी अभिमान न हो। जहाँ भी जायेंगे, जहाँ भी पाँव पड़ेंगे वो भी बाबा का घर हो जायेगा। हमको कोई अपना घर है नहीं, पराये घर में रहते हैं। दुनिया है पराई, पराई से क्या प्रीत! जो अपना मिला है वह ऐसा मिला है, स्वर्ग की बादशाही पीछे मिलेगी पर अभी हम बादशाह बन गये हैं और उस स्वर्ग की बादशाही में नम्बरवार होंगे, अभी हम सभी नम्बरवन हो सकते हैं, इतनी खुली छुट्टी है। भगवान की पढ़ाई ऐसी है जो आज का आया हुआ भी इस पढ़ाई में नम्बरवन जा सकता है, वण्डर है यह। ऐसा मेरा भाग्यविधाता बाप, तो हमें नशा है - शिवबाबा है वरदाता, ब्रह्मा बाबा है भाग्यविधाता। उसके सिवाए और कोई याद आता ही नहीं है, तो हरेक अपना पार्ट देखें। मैं समझती हूँ कि अभी हम बाबा के बच्चों को कोई माया नहीं है। आज से माया खत्म, आज के दिन माया बेचारी पहले मुक्तिधाम में सदा के लिए जा रही है, आधाकल्प के लिए छुट्टी है। अभी हम लक्ष्मी-नारायण के राज्य में जाने वाले हैं, उसके लिये हम तैयार बैठे हैं। क्या समझा है माया ने! बाकी आजकल जो माया का रूप है, वो सीधे शब्दों में कहें तो परचिंतन, परदर्शन, परदोष, यह माया ज़ोर से आ रही है। माया बातें सुना-सुना करके उसको अपने वश में करके बैठी है। माया जब अपनी बातें सुनाती है तो बाबा की बातें अच्छी नहीं लगती, बल्कि कहेंगे यह तो सदा ही सुनते हैं। मुझे परिवर्तन होना है, मुझे अपने संस्कारों को शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ, बनाना है और ये होगा दृढ़ संकल्प से। तो जैसा है अन्दर संस्कार, वैसा होता है स्वभाव। बाबा ने जो खुशी दी है वो सबको देते चलो। अन्दर से मुस्कुराहट भी तब निकलेगी, जब कोई बात मुश्किल नहीं लगेगी। यह थोड़ा मुश्किल है, ऐसा सोचा तो सदा के लिए मुस्कुराहट दूर हो जायेगी। एकदम स्वीट बनना है तो बनो होली, प्यार से सुनो बाबा की बोली और खाओ टोली।

मुझे परिवर्तन होना है, मुझे अपने संस्कारों को शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ, अच्छा, दृढ़ संकल्प से ऐसा बनाना है, तो जैसा है अन्दर संस्कार, वैसा होता है स्वभाव।

ज्वालामुखी योग होगा तो अंत में चेहरा और चलन स्वतः सेवा करेंगे

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

हम सभी सारा दिन कहते हैं मेरा बाबा, इसमें जितना मेरापन आया है उतना याद सहज और स्वतः रहती है। मेरा बाबा दिल से कहते तो बाबा कभी भूल नहीं सकता। फिर बाबा से हमारे सर्व संबंध हैं और सर्व प्राप्तियां भी हैं, जो भी बाबा से चाहिए वह हमें स्पेशल भी मिल सकता है, क्योंकि अधिकार है। जो अधिकार रखकर याद करते हैं, उन्हें भूलना मुश्किल है। जैसे शरीर चलते-फिरते याद रहता है, ऐसे जिसने बाबा को दिल से मेरा बनाया है उन्हें याद स्वतः रहती है। आजकल बाबा अमृतवेले के योग की रिज़ल्ट चेक कर रहे हैं। बाबा ने देखा कि अभी बच्चों का योग साधारण है, इसलिए बाबा ने कहा बच्चे ज्वालामुखी योग करो। ज्वालामुखी योग अर्थात् लाइट-माइट दोनों शक्तियां इमर्ज हों। जैसे सूर्य में लाइट भी है तो माइट भी है। जब सूर्य उदय होता है तो रोशनी हो जाती है, फिर उसकी किरणों से ताकत भी मिलती है। जैसे सोलर पावर है, उसमें सूर्य की किरणों से ताकत लेते हैं। ऐसे बाबा कहते हैं ज्वालामुखी योग माना लाइट-माइट सम्पन्न शक्तिशाली याद। जब हम अपनी सम्पूर्ण स्टेज पर हैं तो आत्मा में फुल लाइट है। जैसे बल्ब में लाइट तो होती है, लेकिन जीरो पावर के बल्ब में पावर नहीं होती और लाइट पावरफुल नहीं तो उसमें कोई काम नहीं कर सकते। तो आत्मा लाइट रूप है लेकिन उस लाइट पर कोई छाया आ गई तो पावर नहीं। कोई भी व्यर्थ संकल्प की छाया उसे ढक देती है। मैं सर्वशक्तिवान बाप का बच्चा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, यह स्मृति ही किरणें बन जाती हैं। तो चेक करना है कि आत्मा लाइट तो है लेकिन उसमें सर्वशक्तियों की माइट कितनी आई है? तो ज्वालामुखी योग में लाइट-माइट दोनों प्रत्यक्ष स्वरूप में होती हैं। सिर्फ सर्वशक्तिवान की बच्ची हूँ यह नहीं, लेकिन वह मेरा स्वरूप है। स्मृति में रहने से स्वरूप बन जायेगा। फिर हमारी शक्ल ऑटोमेटिकली चेंज हो जायेगी और जो हमें देखेगा वह अनुभव करेगा कि इनकी किरणों द्वारा मुझे शक्ति मिल रही है। योग में कभी बाबा से मिलन भी होता है, कभी रूहरिहान होती है, कभी दिल का हाल-चाल सुनाते हैं लेकिन ज्वालामुखी योग का अर्थ है लाइट-माइट स्वरूप होकर, मैं उस स्मृति स्वरूप में बैठूं। अमृतवेले तो ऐसा योग होना ही चाहिए, जितना ज्वालामुखी योग जमा होगा उतना यह चेहरा और चलन सेवा करेगी। अभी समय ऐसा आ रहा है, जब चारों ओर हलचल बढ़ेगी, इसलिए बाबा कहता है अभी से आप अभ्यास करो, समय जितना नज़दीक आयेगा तो कोई को 7 दिन का कोर्स करने का भी समय नहीं मिलेगा। उस समय चेहरे व चलन द्वारा अथवा मन्सा द्वारा ही सेवा करनी होगी।

जितना ज्वालामुखी योग जमा होगा उतना यह चेहरा और चलन सेवा करेगी। अभी समय ऐसा आ रहा है, जब चारों ओर हलचल बढ़ेगी, इसलिए बाबा कहता है अभी से आप अभ्यास करो।

तपस्या सहज तब होगी जब अन्तर्मुखी बन सर्व खामियां खत्म होंगी

तपस्या करने के लिए क्या करना होगा? तपस्या करनी है तो पहले त्यागमूर्त बनो। जो एक बार त्याग हुआ उसमें फिर आंख न डूबे। सम्बन्ध में भी खींच न हो। जब त्यागमूर्त बनते हैं तो ध्यान जाता है, गुणमूर्त भी बनें। एक भी अवगुण न हो। एक होता है अवगुण, दूसरा खामी, तीसरा है कर्म। आसुरी अवगुण कई हैं। वैर, बदला, ईर्ष्या, गुस्सा करना यह बड़े अवगुण हैं। खामी किसे कहेंगे? बड़ा अवगुण नहीं है लेकिन खामी है। खामी खास होती है परचिन्तन से, जो स्वचिन्तन नहीं करने देती। खामी की बड़ी लिस्ट है। चेक करो - अन्दर कौन-कौन सी खामी है। नाउम्मीदी की खामी भी बड़ी नुकसानकारक है। मेरी इनसे बनती नहीं है, यह खामी है। खामी देही-अभिमानी बनने नहीं देती है। क्या करूं, यह मेरा स्वभाव है, मुझे खुशी नहीं होती है, यह खामी है। सुस्ती है, अलबेलापन है, यह खामी है। जब चाहें खायें, सोयें, उठे - यह खामी हैं। यदि खामियां रह जायेंगी तो तपस्या कैसे होगी! इसलिए बाबा कहते हैं अन्तर्मुखी बनो। पहले ये गुण धारण करो तो अवगुण खत्म हो जायें लेकिन कोई खामी भी न रह जाए। इधर की बात उधर करना, उधर की बात इधर करना, छोटी बात को लम्बी करना, लम्बी बात है उसे स्पष्ट न करना, यह सब खामियां हैं। पूरी महसूसता न होना भी खामी है। खामी अर्थात् खराबी। दाल में कुछ काला है। तो अन्दर चेक करके अपने आपको साफ स्वच्छ बनाना है। खामियां मर्यादा को पालन करने नहीं देती हैं। ज्ञान मार्ग में आने से पता चलता है कि हमारे में कितनी खामियां हैं। ज्ञान का अभिमान, सेवा का अभिमान आने से खामियां दिखाई नहीं पड़ती हैं। देही अभिमानी स्थिति से, बाबा की याद से सूक्ष्म चेक करने से पता चलता है कि मेरे में क्या-क्या खामी हैं। किसी-किसी में अवगुण व खामी नहीं होती लेकिन थोड़ी कमी हो सकती है। घबराहट होना - यह भी कमी है। कहेंगे बाबा ने पहले क्यों नहीं बताया तपस्या करना है। हम गृहस्थी हैं, काम धन्धे वाले हैं, ऐसे संकल्प उठाना यह कमी है। अब बाबा का ऑर्डर मिला है तपस्या करनी है, अब नहीं करेंगे तो कब करेंगे। कल्प-कल्प की बाजी है। ऐसा न हो धर्मराज के सामने पश्चाताप करना पड़े। कयामत के पहले बाबा से पूरा वर्सा लेकर शान्ति, सुख, बेहद का वर्सा लेकर शान्ति फैलानी है। जिसमें कोई भी खामी होगी तो वो शान्ति नहीं फैला सकते। तो सदा ध्यान रखना है कि हम ऐसा कोई कर्म नहीं करें, जो वातावरण अशान्त हो जाए। विश्व को आज शान्ति की ज़रूरत है। विश्व में शान्ति फैलाने वालों में ही अगर कमी होगी तो यह काम कौन करेंगे। अब विश्व की ऐसी हालत देख रहे हैं तो अभी तपस्या नहीं करेंगे तो कब करेंगे! अब माया के तूफानों से फ्री होकर, संकल्प-विकल्प से भी मुक्त होकर तपस्या करो।

सर्वगुण, सब कलायें भरने के लिए अवगुण, खामी व कमी को समाप्त करो।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

विश्व को आज शान्ति की ज़रूरत है। विश्व में शान्ति फैलाने वालों में ही अगर कमी होगी तो यह काम कौन करेंगे। अब विश्व की ऐसी हालत देख रहे हैं तो अभी तपस्या नहीं करेंगे तो कब करेंगे!